मुस्लिम नौजवान और सियासी पार्टियां: फायदे, नुकसान और हक़ीक़त

लेखक: डॉ सैयद नासिर शाह

हिंदुस्तान की जम्हूरियत (democracy) दुनिया की सबसे बड़ी जम्हूरियत है। किसी भी देश की तरक्की में नौजवानों का किरदार सबसे अहम होता है। हिंदुस्तानी मुसलमान नौजवानों के सामने आज के दौर में सियासी हालात को समझना और उसमें शामिल होना एक बड़ा और अहम मसला है। सियासत मुआशरे (society) पर गहरा असर डालती है, इसलिए इससे बिल्कुल दूर रहना किसी मसले का हल नहीं है, लेकिन जज़्बात के बजाय होश से फैसले लेने की ज़रूरत होती है।

नीचे एक तफ़सीली तज़जिया (detailed analysis) दिया गया है जो इस मौज़ू पर रोशनी डालता है:

सियासी पार्टियों के साथ जुड़ने के फायदे

- **जम्हूरी नुमाइंदगी (Democratic Representation):** सियासत में शामिल होने से क़ौम और इलाके की आवाज़ ऐवान (Parliament या Assembly) तक पहुँचती है, जिससे क़वानीन (laws) बनाते वक़्त आपके मसाइल को नज़र-अंदाज़ नहीं किया जा सकता।
- **Socio-Economic Development:** सियासी ताक़त और मनसब के ज़रिए तालीम, रोज़गार, और इंफ्रास्ट्रक्चर के मसाइल को हल करने और फलाही स्कीम्स (welfare schemes) को ज़मीन पर लाने में मदद मिलती है।
- **आईनी हुकूक की हिफ़ाज़त:** मेनस्ट्रीम सियासत का हिस्सा बन कर आईन (Constitution) के ज़रिए दिए गए अपने हक़ के लिए आवाज़ उठाना ज़्यादा असरदार होता है।

सियासी पार्टियों के साथ जुड़ने के नुकसान

- **वोट बैंक की सियासत (Tokenism):** कई बार पार्टियां सिर्फ चुनाव के वक़्त तवज्जो देती हैं। नौजवानों को सिर्फ भीड़ इकट्ठा करने या नारे लगाने तक महदूद रखा जाता है, जिससे हक़ीक़ी तरक्की नहीं हो पाती।
- **करियर और तालीम का नुकसान:** सियासत एक फुल-टाइम मैदान है। कई नौजवान जज़्बाती मुद्दों में उलझ कर अपना अहम वक़्त ख़राब कर बैठते हैं, जिसका असर उनकी आला तालीम और प्रोफेशन पर पड़ता है।
- **पोलराइज़ेशन का शिकार:** सियासी फायदे के लिए मुआशरे में जो ध्रुवीकरण (polarization) पैदा किया जाता है, नौजवान अक्सर उसकी भेंट चढ़ जाते हैं, जिससे आम ज़िंदगी में दूरियां बढ़ती हैं।

सियासी पार्टियों का किरदार और मुसलमान (एक तज़जिया)

हिंदुस्तान की सियासी पार्टियों के किरदार को समझने के लिए उनके दावे और उन पर लगने वाली तन्क़ीद (criticism) दोनों को देखना ज़रूरी है:

- **इंडियन नेशनल कांग्रेस (INC):**

  कांग्रेस ने historically "Secularism" और सभी तबक़ों को साथ लेकर चलने का दावा किया है। UPA के दौर में सच्चर कमेटी (2006) बनाई गई जिसने पहली बार सरकारी सतह पर मुसलमानों की पिछड़ी हुई माशी और तालीमी हालत का डेटा सामने रखा। दूसरी तरफ, कांग्रेस पर यह इल्ज़ाम भी हमेशा लगता रहा है कि उसने मुसलमानों को सिर्फ 'वोट बैंक' समझा और आज़ादी के इतने दशकों बाद भी उनकी तालीम और रोज़गार के लिए ज़मीनी सतह पर ठोस तरक्की नहीं की।

- **भारतीय जनता पार्टी (BJP):**

  BJP की सियासत का मरकज़ "सबका साथ, सबका विकास" का नारा है। उनका दावा है कि सरकारी स्कीम्स–जैसे PM आवास योजना, मुद्रा योजना, और फ्री राशन–का फायदा बिना किसी मज़हबी भेदभाव के मुसलमानों को मिला है। हाल ही में पार्टी ने पसमांदा मुसलमानों (backward classes) तक पहुँचने की मुहिम भी शुरू की है। लेकिन, CAA/NRC जैसे क़ानून, हिंदुत्व ideology, और चुनावों में मुसलमानों को टिकट ना देने (कम नुमाइंदगी) की वजह से इन पर तन्क़ीद होती है और एक तबक़े में उनके खिलाफ बेचैनी पाई जाती है।

- **रीजनल पार्टियां (Samajwadi Party, TMC, RJD):**

  उत्तर प्रदेश, बिहार और वेस्ट बंगाल जैसे राज्यों में इन रीज़नल पार्टियों ने मुसलमानों की हिफ़ाज़त और सेकुलरिज्म का भरोसा दिलाया है। लोकल और स्टेट लेवल पर इन पार्टियों में मुसलमानों की पोलिटिकल नुमाइंदगी काफी बेहतर रही है। हालांकि, इनपर अक्सर यह तन्क़ीद होती है कि यह पार्टियां खौफ की सियासत करके वोट लेती हैं, पर हुकूमत में आने के बाद higher education और employment जैसे मुद्दों पर खामोश रहती हैं।

- **मुस्लिम-क़यादत वाली पार्टियां (जैसे AIMIM, AIUDF):**

  इन पार्टियों ने पार्लियामेंट और असेंबलीज़ में मुसलमानों के हक़ (जैसे मॉब लिंचिंग, हिजाब, और दीनी मसाइल) पर खुल कर और बेबाकी से आवाज़ उठाई है। यह अपने दम पर "direct representation" की बात करते हैं। इसके बर-अक्स, इन पर 'वोट-कटर' (B-Team) होने और जज़्बाती तक़रीरों से पोलराइज़ेशन बढ़ाने के इल्ज़ामात लगते रहते हैं, जिससे इनडायरेक्ट फायदा उन्हीं को होता है जिनका यह विरोध करते हैं।

नतीजा (Conclusion)

हिंदुस्तानी मुसलमान नौजवान के लिए ज़रूरी है कि वह सियासत को जज़्बात (emotions) के चश्मे से देखने के बजाय हक़ीक़त पसंदी (realism) से देखे। किसी भी पार्टी का अंधा समर्थन करने या सिर्फ विरोध करने के बजाय, उनके काम और उनकी पॉलिसीज़ को मापना ज़रूरी है। सियासत ज़रूरी है, लेकिन सबसे पहले तालीम (education), माशी खुद-मुख्तारी (financial independence), और आईन (Constitution) की अच्छी समझ हासिल करना वक़्त की सबसे बड़ी मांग है।